Indian Journal of Educational Studies : An Interdisciplinary Journal
2015, Vol.2, No.1, ISSN No. 2349-6908

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के सहसंबंध तथा कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर पर लिंग एवं अनुभव के प्रभाव का अध्ययन

हंसराज पाल, आशा पाल** और नीलम वर्मा****

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के सहसंबंध तथा कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर पर लिंग एवं अनुभव के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध हेतु शोधकों द्वारा न्यादर्श हेतु इन्दौर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में शोधकों द्वारा डा. प्रमोदकुमार तथा डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित अध्यापक कृत्य संतोष प्रश्नावली एवं डा. चन्द्रभान द्विवेदी द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का उपयोग किया गया। प्रदत्त के विश्लेषण हेतु गुणन–आघूर्ण (Product-Movement) सहसंबंध विधि एवं 'टी' (ज जमेज) परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणाम ज्ञात कर निष्कर्ष निकाले गये।

मुख्य शब्द– *कार्य संतुष्टि, आकांक्षा स्तर, लिंग एवं अनुभव*

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में जन्म लेता है, शिक्षा प्राप्त करता है तथा जीवनयापन हेतु कोई कार्य करता है। यदि उसे अपने कार्य करने से संतुष्टि मिलती है तो वह कार्य उसकी उपलब्धियां बढ़ाने में सहायक होती है। यह कार्य उसका सामाजिक एवं पारिवारिक समायोजन बनाये रखने में मदद करता है। कार्य संतुष्टि का सीधा संबंध कार्यकर्ताओं की कुशलता, क्षमता एवं उनकी उत्पादन शक्ति से है। प्रत्येक क्षेत्र या व्यवसाय में व्यक्ति तब तक रुचि नहीं लेता जब तक उसे कार्य में संतुष्टि का अनुभव नहीं होता है। किसी भी व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिये या कार्य को अच्छे ढ़ंग से करने के लिये आवश्यकता है कि वह अपनी संपूर्ण शक्ति से इस क्रिया में सहयोग दें। इसके लिये कार्य संतुष्टि एक विशेष कारक माना गया है। व्यक्ति की कुछ आकांक्षायें होती है। इन आकांक्षाओं का संबंध जीवन के कार्यों से होता है। प्रत्येक व्यक्ति का आकांक्षा स्तर भिन्न–भिन्न होता है और इसी के आधार पर व्यक्ति अपने लक्ष्य निर्धारित करता है। आकांक्षा स्तर अन्तःकरण की वह प्रबल भावना है, जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किसी कार्य में विशिष्टता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

* आचार्य(से.नि.),शिक्षा अध्ययनशाला, दे.अ.वि.वि. इन्दौर
** सहायक प्राध्यापक, होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर
*** शोध छात्रा, शिक्षा अध्ययनशाला, दे.अ.वि.वि. इन्दौर

औचित्य

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, परन्तु यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट ना हो तो इसका सीधा प्रभाव शिक्षण गतिविधियों पर पड़ता है। यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट हो तो वह अपने लक्ष्य को सही तरीके से निर्धारित करते है, यह लक्ष्य निर्धारण आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। यदि आकांक्षा स्तर उच्च हो तो के अपने लक्ष्य की प्राप्ति आसान कर लेते है। कार्य संतुष्टि होने से वे ना केवल कार्य स्थल पर अपितु परिवार के साथ भी अच्छी तरह समायोजित हो पाते हैं।

कार्यसंतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य हुए जैसे माथुर (1970) छात्रों की शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षास्तर एवं निराशा के कारणों के मध्य सहसंबंध पर शोधकार्य किया, लंवगिया (1974) ने विद्यालयीन शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि पर शोधकार्य किया, इन्तोदिया (1974) ने उदयपुर जिले के ग्रामीण समुदाय के युवाओं की आवश्यकताएं, रुचियों और आकांक्षाओं पर अध्ययन किया, बिष्ट (1977) ने शैक्षिक आकांक्षा स्तर का समाजार्थिक स्थिति एवं शैक्षिक प्रयासों के मध्य सहसंबंध पर शोधकार्य किया, सिन्हा (1978) ने सामान्य उच्च शिक्षा में अव्यवसायिक कार्य करने वालों की कार्य संतुष्टि, कार्य आकांक्षा व कार्य योग्यता के संबंध पर अध्ययन किया, नायक (1982) ने विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि और समायोजन पर शोधकार्य किया, अग्रवाल (1983) ने प्रधानाध्यापकों की शैक्षिक प्रशासकीय प्रभावशीलता पर तनाव, समायोजन एवं कार्य संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया, कवकर (1983) ने महिलाओं के व्यवहार, कार्य मूल्यों एवं व्यवसायिक रुचियों के संबंध में कार्य संतुष्टि पर शोधकार्य किया, प्रकाश (1984) ने केरल के महाविद्यालयीन छात्रों में आकांक्षा के मूल्य और समायोजन का अध्ययन किया, प्रकाश (1984) ने आकांक्षा के स्तर को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन, सिंह (1985) ने विभिन्न व्यवसायों और कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध पर शोधकार्य किया, कुलसम (1985) ने बैंगलोर शहर के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि और कार्य संलग्नता पर विद्यालय परिवर्तन के प्रभाव पर शोधकार्य किया, दीक्षित (1986) ने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया, जोशी (1986) ने माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कृत्य संतोष पर शोधकार्य किया, एवं गुप्ता (1993) ने लिंग शैक्षिक और कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया।

परन्तु अभी तक जो भी शोधकार्य कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के संबंधित चरों हुये है उनमें से किसी भी अध्ययन में शिक्षकों पर इन दोनों चरों का एक साथ अध्ययन नहीं किया गया है। अतः इससे प्रस्तुत अध्ययन 'शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के संबंध तथा कार्य संतुष्टि और आकांक्षास्तर पर लिंग एवं अनुभव के प्रभाव का अध्ययन' की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या थी–

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के संबंध तथा कार्य संतुष्टि और आकांक्षास्तर पर लिंग एवं अनुभव के प्रभाव का अध्ययन।

उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

(i) शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के मध्य संबंध का ज्ञात करना।1
(ii) महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
(iii) अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
(iv) महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आकांक्षास्तर की तुलना करना।

(v) अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों के आकांक्षास्तर की तुलना करना।

परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित परिकल्पनायें थी–

1. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आकांक्षास्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों के आकांक्षास्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध इन्दौर शहर में स्थित शासकीय विद्यालयों (शासकीय कस्तूरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इन्दौर, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बीजलपुर) एवं अशासकीय विद्यालयों (सनशाइन पब्लिक स्कूल, भारतीय अकादमी, प्रखर विद्यालय, सरस्वती शिशु मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अल्पाइन पब्लिक विद्यालय, पंकज हाईस्कूल मालव शिशु विहार एवं न्यू गोल्डन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय) से 55 शिक्षकों का चयन दैव न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन की आवश्यकतानुसार अग्रलिखित मानकीकृत उपकरणों का चयन किया गया– डा. प्रमोदकुमार तथा डी. एन. मुथा (1975) द्वारा निर्मित अध्यापक कृत्य संतोष प्रश्नावली एवं डा. चन्द्रभान द्विवेदी द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी।

प्रदत्त संकलन विधि

प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम विद्यालय मे ंजाकर प्राचार्यों से कृत्य संतोष प्रश्नावली एवं आकांक्षा स्तर मापनी भरवाने की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर उन्हें अध्ययन का आशय स्पष्ट करते हुए विश्वास में लिया गया कि आपके द्वारा दी गयी जानकारी को पूर्णतः गुप्त रखा जायेगा एवं इन जानकारियों का उपयोग केवल शोधकार्य के लिये ही किया जावेगाा। तत्पश्चात् अध्यापक कृत्य संतोष प्रश्नावली एवं आकांक्षा स्तर मापनी शिक्षकों से भरवायी गयी।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्यतः दो चरों से संबंधित आंकड़े एकत्रित किये गये है। कार्य संतुष्टि और आकांक्षा स्तर। इन आंकड़ों से सहायता से कार्य संतुष्टि और आकांक्षा स्तर में सहसंबंध ज्ञात करने के लिये गुणन–आघूर्ण सहसंबंध विधि का उपयोग किया गया एवं विभिन्न समूहों में अंतर की सार्थकता को जानने के लिये लघु समूह 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

परिकल्पना–1 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

उक्त परिकल्पना के परीक्षण के लिये गुणन आघूर्ण सहसंबंध विधि का प्रयोग किया गया। परीक्षण से

प्राप्त मूल्य को तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1.1 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर को दर्शाती तालिका

चरों के नाम	कुल प्रदत्त संख्या	r का मूल्य
कार्य संतुष्टि	55	0.111
आकांक्षा स्तर	55	
0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।		

तलिका 1.1 से ज्ञात होता है कि कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसंबंध 0.111 है यह मूल्य 53 स्वतंत्रता के अंश (df) पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। यह परिणाम यह बताते है कि कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसंबंध नहीं है। यहां जो संबंध आ रहा है वह अवसर के कारण आ रहा है। इसका कारण यह हो सकता है कि जिन अध्यापकों की कार्य संतुष्टि अधिक है उनका आकांक्षा स्तर अल्प अथवा अधिक हो सकता हैं क्योंकि कई सारे ऐसे कारक है जो आकांक्षा स्तर से भी संबंधित होते है और कार्य संतुष्टि से भी। जैसे एक कारक है पदोन्नति के अवसर। यह कार्य संतुष्टि को तो प्रभावित करता ही है साथ ही आकांक्षा स्तर को भी। ऐसा भी हो सकता है कि कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर इतने अधिक भी समान नहीं है कि सार्थक रूप से एक दूसरे से सहसंबंधित हो। सांख्यिकीय तथ्यानुसार लघु न्यादर्श के कारण संबंध ा होने पर भी उभरकर नहीं आता है। अतः अध्ययन हेतु बनायी गयी शून्य परिकल्पना 'शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षास्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है' स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना– 2 महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया। परीक्षण से प्राप्त मूल्य को तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1.2 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर लिंग के प्रभाव को दर्शाती तालिका

समूह	समूह सदस्यों की संख्या	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	'ज' का मान (ज . अंसनम)
महिला शिक्षक	44	22.75	4.00	1.999
पुरूष शिक्षक	11	21.09		3.91
0.05 स्तर पर सार्थक नही				

तलिका 1.2 से ज्ञात होता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का कार्य संतुष्टि मध्यमान का मूल्य क्रमशः 22.75 और 21.09 है तथा 'ज' का प्राप्त मूल्य 1.999 है यह मूल्य 53 के स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 (का) स्तर पर भी सार्थक नहीं है जिससे यह पता चलता है कि पुरूषों की कार्य संतुष्टि महिलाओं की कार्य संतुष्टि के समान ही होती है। यहां यह इसलिये भी हो सकता है कि चुने हुये शिक्षक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत है। महिला एवं पुरूष शिक्षकों को समान वेतन, समान सुविधाएं, पदोन्नति के समान अवसर मिल रहे है। दोनों समान स्थितियों में कार्य कर रहे थे, दोनों के कार्य के घंटे समान है यहां तक की दोनों की शैक्षणिक योग्यता भी करीब–करीब समान है। इसलिये दोनों की कार्य संतुष्टि भी समान है। इस आधार पर कह सकते है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसलिये शून्य परिकल्पना 'महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है'। स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना– 3 अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है।

उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया। परीक्षण से प्राप्त मूल्य को तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1.3 अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को दर्शाती तालिका

समूह	समूह सदस्यों की संख्या	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	't' का मान (t - value)
अधिक अनुभवी	15	25.90	2.30	2.082
अल्प अनुभवी	15	21.00	3.46	
0.05 स्तर पर सार्थक है।				

तलिका 1.3 से ज्ञात होता है कि अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 25.90 और 21.00 है तथा 'ज' का प्राप्त मूल्य 2.082 है यह मूल्य 28 के स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 (का) स्तर पर भी सार्थक है जिससे यह पता चलता है कि अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अंतर है। मध्यमानों का मूल्य देखने से पता चलता है कि

अल्प अनुभवी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक अनुभवी शिक्षकों का मध्यमान अधिक है इससे कह सकते है कि अधिक अनुभवी की कार्य संतुष्टि अल्प अनुभवी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। शायद इसका कारण यह हो सकता है कि जब व्यक्ति एक ही व्यवसाय में बहुत समय तक कार्य करता है तो वह उसकी उस व्यवसाय में रुचि होने का कारण बनता है। रुचि कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाला एक कारक है। उस व्यवसाय में रुचि होने से उनकी कार्य संतुष्टि भी अधिक है जो अल्प अनुभवी शिक्षक की कम संतुष्टि का कारण यह हो सकता है कि ये लोग तो कोई काम न मिलने पर शिक्षक बन गये। अल्प अनुभवी शिक्षकों की इस व्यवसाय में रुचि कम होने के कारण कार्य संतुष्टि कम होती है। अधिक अनुभवी को कार्य संतुष्टि एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'। अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना– 4 महिला एवं पुरूष शिक्षकों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया। परीक्षण से प्राप्त मूल्य को तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1.4 शिक्षकों की आकांक्षा स्तर पर लिंग के प्रभाव को दर्शाती तालिका

समूह	समूह सदस्यों की संख्या	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	't' का मान (t - value)
महिला शिक्षक	44	6.01	15.99	.585
पुरूष शिक्षक	11	8.12	21.09	
0.05 स्तर पर सार्थक नहीं				

तलिका 1.4 से ज्ञात होता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का आकांक्षा स्तर मध्यमान का मूल्य क्रमशः

6.01 और 8.12 है तथा 'ज' का प्राप्त मूल्य .585 है यह मूल्य 53 के स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 (df) स्तर पर भी सार्थक नहीं है जिससे यह पता चलता है कि लिंग का प्रभाव आकांक्षा स्तर पर नहीं होता। महिला एवं पुरूष शिक्षकों की आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं है। इसकी पुष्टि प्रकाश (1984) द्वारा किये गये अध्ययन सं होती है। इस प्रकार बनायी गयी शून्य परिकल्पना 'अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है'। स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना– 5 अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

उक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'ज' परीक्षण का उपयोग किया गया। परीक्षण से प्राप्त मूल्य को तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका 1.5 अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को दर्शाती तालिका

समूह	समूह सदस्यों की संख्या	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	't' का मान (t - value)
अधिक अनुभवी	15	2.63	11.36	1.576
अल्प अनुभवी	15	1.80	12.92	
0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।				

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये–

(i) शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया।
(ii) महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।
(iii) अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
(iv) महिला एवं पुरूष शिक्षकों के आकांक्षास्तर में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।
(v) अधिक अनुभवी एवं अल्प अनुभवी शिक्षकों के आकांक्षास्तर में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।

संदर्भ

Buch, M. B. (1974). (Ed.). A survey of research in education. India: Centre of Advanced Study in Education. Faculty of Education and Psychology, MS University of Baroda.

Buch, M.B. (1979). (Ed.). Second Survey of Research in Education (1972-1978). India: Soceity for Educational Research and Development. MS University of Baroda.

Buch, M.B. (1986). (Ed.): Third Survey of Research in Education (1978-1983). India: National Council for Educational Research and Training. New Delhi.

Buch, M.B. (1991) (Ed.): Fourth Survey of Research in Education (1983-1988). Vol. I and II. India: National Council for Educational Research and Training. New Delhi.

NCERT. (2006). Fifth Survey of Educational Research in Education (1993-2000) Vol. I and II. India: National Council for Educational Research and Training. New Delhi.

NCERT. (2006) Sixth Survey of Educational Research (1993-2000).Vol. I. India: National Council for Educational Research and Training. New Delhi.

NCERT. (2007) Sixth Survey of Educational Research (1993-2000). Vol. II. India: National Council for Educational Research and Training. New Delhi.